जैन जी. के.
General Knowledge
भाग - 2
डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

1 प्रार्थना

हे भगवान!
जो जानें द्रव्य - गुण स्वरूप,
वो पहचानें अपना सही रूप।
अनंत निर्भयता आती उनको,
दीन - हीन भाव नहीं पनपते उनको।
है यही भावना मेरी,
है यही प्रार्थना मेरी।
दूर हों सभी के विभाव रूप,
जानें सभी अपना ज्ञान स्वरूप।

2 मुक्ति बस

एक दो,
आत्मा में लीन हो।
तीन चार,
कषायें जातीं चार।
पांच छः,
गुणस्थान पार छः।
सात आठ,
कर्म नहीं जिनके आठ।
नौ दस,
उनको मुक्ति बस।

3 पर्याय
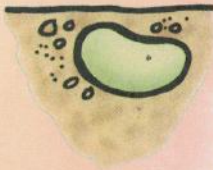
गुणों में होनेवाला परिणमन हूँ मैं,
द्रव्य में क्रमशः होती हूँ मैं।
द्रव्य के बिना नहीं होती मैं,
अनित्यस्वभाव वाली कौन हूँ मैं?
पर्याय, पर्याय, पर्याय
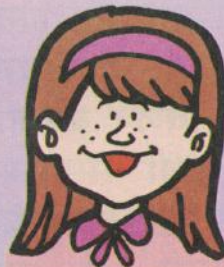
एक साथ रहते हैं सभी गुण द्रव्य में,
एक साथ रहतीं नहीं पर्याय कभी द्रव्य में[1]।
परिणमन ही पर्याय की पहचान है,
प्रति समय पलटना ही उसका काम है।

(1) एक गुण की भूत - भावि पर्याय द्रव्य में एक साथ नहीं रहतीं।

4

गुण

विश्व बना है द्रव्यों से,
द्रव्य बना है गुणों से।
द्रव्य कभी नष्ट नहीं होते हैं,
विश्व कभी नष्ट नहीं होता है।
गुण भी कभी नष्ट नहीं होते हैं ,
पर गुणों में नित परिवर्तन होता है ।
गुण दो रूप में पाए जाते हैं,
जो सामान्य - विशेष कहलाते हैं।
द्रव्य की सिद्धि होती सामान्य गुणों से,
द्रव्य भिन्न-भिन्न सिद्ध होता विशेष गुणों से।
जो सभी द्रव्यों में रहते हैं,
वे सामान्यगुण मुख्यतः छः होते हैं।
विशेष सब द्रव्यों में नहीं रहते हैं,
वे तो अपने- अपने द्रव्य में ही रहते हैं।
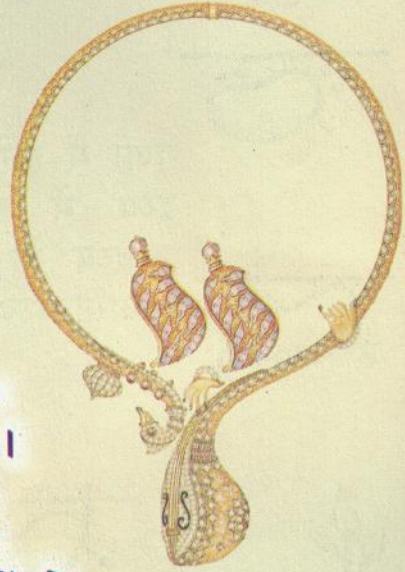
5 अस्तित्व - वस्तुत्व गुण
नष्ट नहीं होने देता द्रव्यों को मैं,
"सब की सत्ता है" - इतना ही बतलाता मैं।
प्रत्येक द्रव्य में रहता हूँ मैं,
बतलाओ कौन सा गुण हूँ मैं ?
अस्तित्व गुण
USE
ME
प्रयोजनभूत है वस्तु,
निरर्थक नहीं है वस्तु।
यह बतलाता हूँ मैं,
बताओ कौन हूँ मैं?
वस्तुत्व गुण
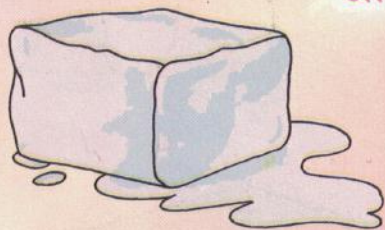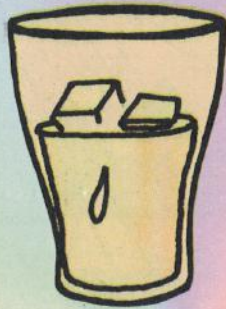
परिणमनशील है द्रव्य,
प्रत्येक वस्तु है द्रव्य।
यह बतलाता हूँ मैं,
बताओ कौन हूँ मैं ?

द्रव्यत्व गुण
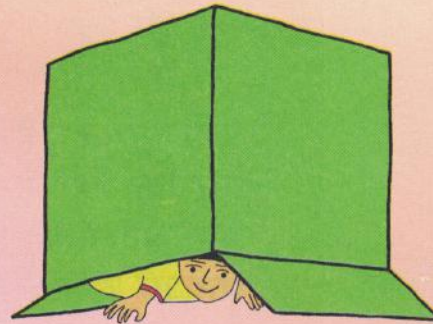
किसी न किसी के ज्ञान के विषय हैं द्रव्य,
अनजान, अज्ञात नहीं जिसके कारण द्रव्य।
गुणों में चौथा नम्बर जिसका,
बताओ क्या नाम है उसका ?

प्रमेयत्व गुण

7 अगुरुलघुत्व - प्रदेशत्व गुण

द्रव्य में द्रव्यपन रहता मेरे कारण,
अनंतगुण बिखर कर अलग नहीं होते मेरे कारण।
एक द्रव्य, दूसरे द्रव्य रूप नहीं होता मेरे कारण,
एक गुण- दूसरे गुण रूप नहीं होता मेरे कारण।
पांचवे नम्बर का गुण हूँ,
बताओ मैं कौन हूँ?

अगुरुलघुत्व गुण

निराकार नहीं होते द्रव्य मेरे कारण,
किसी न किसी आकार में रहते मेरे कारण।
सामान्य गुण हूँ मैं,
कौन सा गुण हूँ मैं?

प्रदेशत्व गुण

8 क्या आप जानते हो?

1. कितने समय में कितने जीव मोक्ष जाते हैं ?
   6 माह 8 समय में 608 जीव ।
2. मोक्ष जाने योग्य जीव को क्या कहते हैं ?
   भव्य ।
3. जिन जीवों में मोक्ष जाने की योग्यता नहीं है उन्हें क्या कहते हैं ?
   अभव्य ।
4. मुक्ति से क्या तात्पर्य है ?
   दु:खों से पूर्णत: छूटना, पूर्ण निराकुल होना ।
5. दु:ख क्या है ?
   आकुलता ही दु:ख है ।
6. आत्मा का हित किस बात में है ?
   निराकुल सुख की प्राप्ति में ।
7. बंध किससे होता है ?
   मोह - राग - द्वेष से ।
8. बंध से छूटने का एक मात्र उपाय क्या है ?
   रत्नत्रय ।
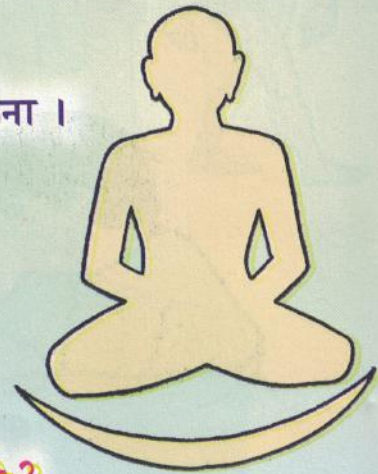
9 बताओ तो जानें

1. क्या तीर्थंकर प्रकृति बंधने के बाद अनंत भव हो सकते हैं ?
   नहीं ।
2. तीर्थंकर प्रकृति बंधने के बाद अधिक से अधिक कितने भव हो सकते हैं ?
   तीन ।

3. एक क्षेत्र में एक साथ कितने तीर्थंकर होते हैं ?
   एक ही।
4. तीर्थंकरों द्वारा दिए जाने वाले उपदेश को क्या कहते हैं ?
   दिव्यध्वनि ।
5. तीर्थंकरों के उपदेश खिरने के लिए किसकी उपस्थिति आवश्यक है ?
   गणधर ।
6. क्या तीर्थंकरों को किसी को प्रेरणा देने का विकल्प होता है ?
   नहीं ।
7. तीर्थंकरों की उपदेश देनेवाली धर्म सभा को क्या कहते हैं ?
   समवशरण ।
8. तीर्थंकरों के जीवन काल की पांच प्रमुख घटनाओं को क्या कहते हैं ?
   पंचकल्याणक ।
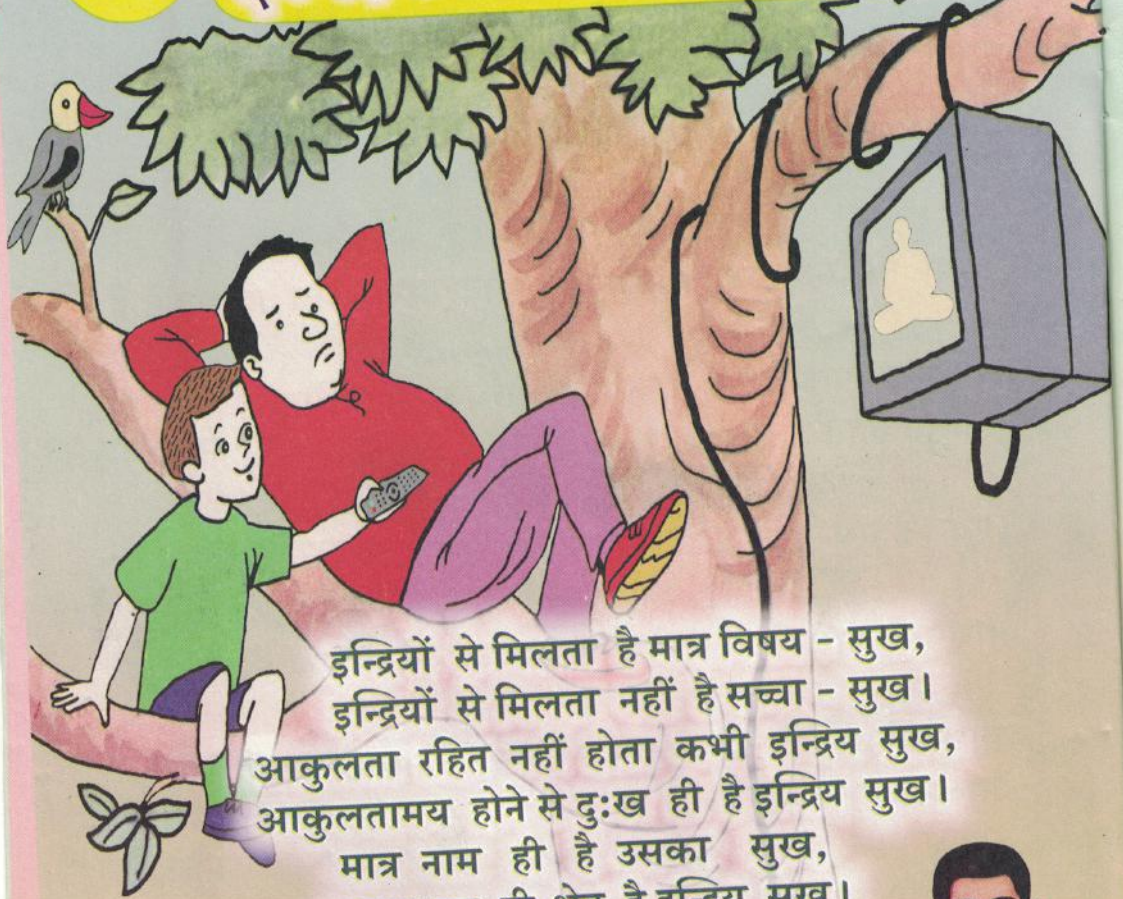
10 इन्द्रिय - अतीन्द्रिय सुख
इन्द्रियों से मिलता है मात्र विषय - सुख,
इन्द्रियों से मिलता नहीं है सच्चा - सुख।
आकुलता रहित नहीं होता कभी इन्द्रिय सुख,
आकुलतामय होने से दुःख ही है इन्द्रिय सुख।
मात्र नाम ही है उसका सुख,
दुःख का ही भेद है इन्द्रिय सुख।
आत्मलीनता से ही होता अतीन्द्रियसुख,
निराकुल शांति स्वरूप है अतीन्द्रियसुख।
सहज दशा में ही होता है अतीन्द्रियसुख,
इसे ही कहते हैं जिनशासन में सच्चासुख।
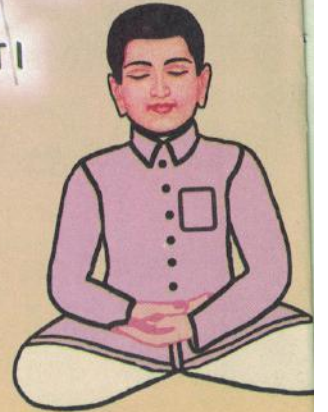
11 सच्चा सुख

कहने में नहीं आता सच्चा सुख,
दिखाने में संभव नहीं है सच्चा सुख।
अनुभव की वस्तु है सच्चा सुख,
आत्मोन्मुखी है सच्चा सुख।
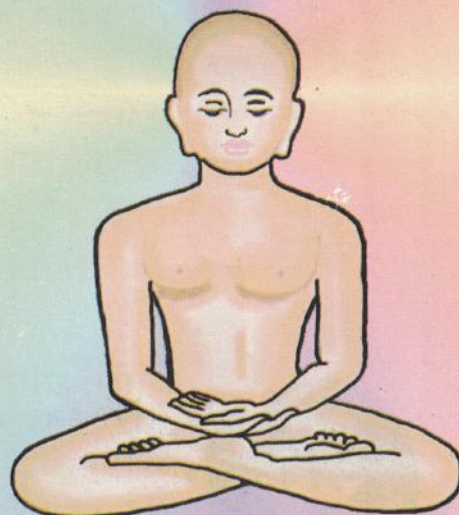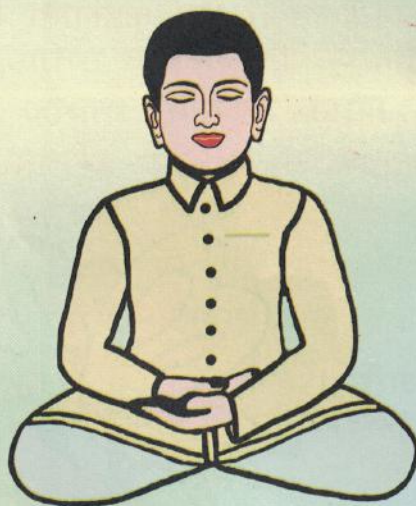
आत्म साक्षात्कार होता है स्वानुभूति से,
सच्चा सुख प्राप्त होता है स्वानुभूति से।

12

शरीर

संसारी अवस्था में जीव मुझमें ही रहता है,
मेरी इन्द्रियों के माध्यम से ज्ञान और भोग करता है।
मेरे द्वारा किया गया ज्ञान इंद्रियज्ञान कहलाता है,
मेरे द्वारा भोगा गया सुख इंद्रियसुख कहलाता है।

जीव के साथ रहने से मैं भी जीव कहलाता हूँ,
तब सब मेरा नाम रखते, मान करते;
ध्यान रखते, वर्षों साथ रहने की कसम खाते,
पर जीव के निकलने पर शव कहलाता मैं।

फिर किसी को क्षणभर भी न सुहाता मैं,
पलों में वे विदा करते, अग्नि को समर्पित करते।
पुद्गल द्रव्य से बना हूँ मैं,
बताओ कौन हूँ मैं?

शरीर, शरीर, शरीर।

ाता हूँ,
करते;
खाते,
ा मैं।

13 अपना स्वरूप

1.आत्मा कभी मरता क्यों नहीं है ?
जीवत्व शक्ति के कारण ।

2.जीवत्व शक्ति के कारण आत्मा का क्या नाम है ?
जीव ।

3.जीवत्व शक्ति के कारण आत्मा कब तक जीता है ?
अनादि - अनंत काल तक ।

4.क्या जीव के जीवन का आधार भोजन, हवा, पानी है ?
नहीं, जीव के जीवन का आधार जीवत्व शक्ति है।

5.चिति शक्ति के कारण आत्मा क्या कहलाता है ?
चेतन ।

6.आत्मा कभी अजीव क्यों नहीं होता ?
चिति शक्ति के कारण।

7.आत्मा में कितनी शक्तियाँ हैं ?
अनंत ।

14 जिनागम से

1. स्थावर जीवों में कितनी इन्द्रियाँ होती हैं ?
   एक मात्र स्पर्शन इन्द्रिय ।
2. स्थावर जीव कितने प्रकार के होते हैं ? नाम बताइए ।
   पांच-पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, और वनस्पतिकायिक ।
3. वनस्पति के कितने भेद हैं ? नाम बताइए ।
   दो- साधारण वनस्पति और प्रत्येक वनस्पति।
4. साधारण वनस्पति किसे कहते हैं ?
   अनंत जीवों के एक शरीर निगोद को ही साधारण वनस्पति कहते हैं ।
5. साधारण शरीर वनस्पतिकायिक जीव कितने प्रकार के होते हैं ?
   दो - सूक्ष्म और बादर (स्थूल) ।
6. सूक्ष्म साधारण शरीर (निगोदिया जीव) कहाँ रहते हैं ?
   सूक्ष्म निगोदिया जीव लोक में ठसाठस भरे हैं, वे सूक्ष्म होने से हमारे ज्ञान के विषय नहीं बनते हैं ।
7. बादर साधारण शरीर (निगोदिया जीव) कितने प्रकार के हैं ?
   दो-पर्याप्त और अपर्याप्त ।
8. एक ही निगोद शरीर में पर्याप्त - अपर्याप्त जीव एक साथ पैदा हो सकते हैं ?
   नहीं , क्योंकि निगोदिया जीवों के एक साथ समान कर्म ही उदय में आते हैं।
9. क्या निगोदिया जीव के मरने पर उनका शरीर नष्ट हो जाता है ?
   नहीं , क्योंकि एक निगोद शरीर में अनंतानंत जीव एक साथ उत्पन्न होते हैं, मरते हैं पर निगोद शरीर ज्यों का त्यों बना रहता है, नष्ट नहीं होता।
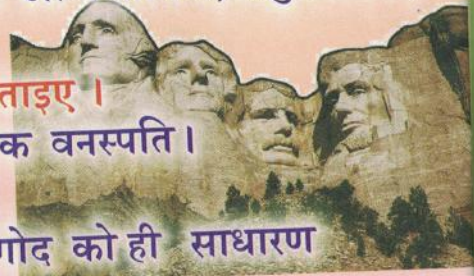
15 अज्ञान से

गुरुजी: पूँछकर खाना केक जी,
केक में होते अंडे जी।
मस्त: मैं क्यों पूँछूँ मास्टर जी ?
पाप पड़ेगा कुक को जी।
गुरुजी: न, न, न।
ऐसा संभव नहीं तीन काल में,
अज्ञान का बड़ा पाप लगेगा तुम्हें।
मस्त: जब मुझको कुछ नहीं मालुम जी,
तब पाप क्यों पड़ेगा मुझको भी ।
ज्ञान होगा जिसको जी,
पाप पड़ेगा उसको ही।
गुरुजी: अज्ञानी बनकर पाप से मुक्त न हो पाओगे,
अपनी करनी का फल तो तुम्हीं पाओगे।
क्योंकि -
जानता नहीं अग्नि स्वभाव जो,
हाथ डाले यदि अग्नि में वो।
तो क्या वह जलने से बच जाएगा ?
अपनी अज्ञानता की सजा न पाएगा ?
मस्त: अग्नि स्वभाव जो जानता नहीं,
बचने का उपाय वह करेगा नहीं ।
वह तो जलेगा ही जलेगा,
कोई तर्क उसका नहीं चलेगा।
गुरुजी: बस इसीप्रकार -
वस्तु स्वभाव जो जानता नहीं,
बचने का उपाय वह करेगा नहीं।
संसार में भटकेगा वह अज्ञान से,
दु:खों को भोगेगा वह अज्ञान से।

यिक,

हैं ?

होने

हैं ?

ता है ?
क साथ
ना रहता

16 ज्ञान से

जीव बना है ज्ञान से,
शरीर बना है पुद्गल से।
मुक्ति मिलती ज्ञान से,
संसार है अज्ञान से।
दुःख नहीं होता ज्ञान से,
सुख नहीं मिलता अज्ञान से।
कर्म कटते ज्ञान से,
दुःख दूर होता ज्ञान से।
सुख मिलता ज्ञान से,
भगवान बनते ज्ञान से।
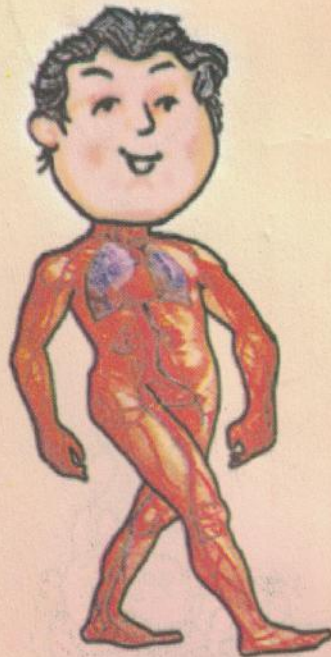
डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया, ललितपुर - झांसी के प्रसिद्ध एडवोकेट श्री अभिनंदन कुमारजी टड़ैया के सुपुत्र श्री अविनाश कुमारजी टड़ैया की धर्मपत्नी धर्म पत्नी एवं प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की सुयोग्य ज्येष्ठ पुत्री हैं। आपका जन्म अशोकनगर (मध्यप्रदेश) में ३० जनवरी १९५८ को हुआ। अध्यात्मिक वातावरण एवं धार्मिक संस्कारों में पलीपुसी डॉ. शुद्धात्मप्रभा निरंतर अध्ययनशील रही हैं। सम्प्रति वह अपने परिवार के साथ मुंबई में रहती हैं। जहाँ आपके पति का डायमंड एवं डायमंड ज्वैलरी का व्यवसाय है। मुंबई में आप आध्यात्मिक प्रवचन करती ही हैं, पंडित टोडरमलस्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित, शिक्षण - प्रशिक्षण शिविरों में भी आपका सराहनीय योगदान रहता है।

डॉ. शुद्धात्मप्रभा बचपन से ही प्रतिभाशाली रहीं हैं। आपने **बी.ए.** (ऑनर्स) संस्कृत में **स्वर्णपदक** प्राप्त किया। आपके द्वारा **एम. ए.** में लघुशोधनिबंध के रूप में लिखी गई **आ. अमृतचंद्र और उनका पुरुषार्थसिध्युपाय** नामक पुस्तक मात्र १९ वर्ष की अवस्था (२७ नवम्बर १९७७) में प्रकाशित हो गई। इस कृति में आ. अमृतचंद्र के व्यक्तित्व के साथ - साथ पुरुषार्थसिध्युपाय ग्रंथ का विभिन्न दृष्टि से समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है।

पी.एच. डी. के शोध-प्रबंध में आ. कुन्दकुन्द के ग्रंथो की समस्त विषय वस्तु को सीधी-सादी, सरल-सुबोध भाषा में संक्षेप में प्रस्तुत किया ही है, साथ-ही-साथ उनकी अमृतचंद्रीय और जयसेनीय टीकाओं का तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया है। आपने विभिन्न आयुवर्ग को ध्यान में रखकर भिन्न - भिन्न शैलियों में अध्यात्म को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया है।

समस्त प्राणियों का मुख्य उद्देश्य 'सुख प्राप्ति' को डायरी शैली में लिखी गई **तलाश : सुख** की पुस्तक में ७४ वर्षीया वृद्धा के माध्यम से बताया गया है। जैनदर्शन के सार को सरल व संक्षेप में प्रस्तुत करने वाली **जैनदर्शनसार**, युवा वर्ग में धार्मिक संस्कार देने की दृष्टि से पत्र शैली में लिखी **विचार के पत्र : विकार के नाम**, किशोरवर्ग (Teen aggers) के चिंतन को नई दिशा देने वाली **सत्ता का सुख, संस्कार का चमत्कार** पुस्तकें नाटक के रूप में लिखी गई हैं और **मुक्ति की युक्ति** एवं **प्रमाणज्ञान** पुस्तकें पद्यात्मक संवादों में लिखी गई हैं।**सत्ता का सुख**, कृति में छह द्रव्यों का वर्णन व्यंग्यात्मक रूप में किया गया है। साथ ही इस पुस्तक में नेमिकुमार के वैराग्य के प्रसंग को तथा राम वनवास प्रसंग को भी नए चिंतन के साथ प्रस्तुत किया है।**मुक्ति की युक्ति** 'यथा नाम तथा गुण' पुस्तक है। इसमें पद्यात्मक संवादों के माध्यम से मोक्ष प्राप्ति का उपाय संक्षेप में बताया है। इस कृति में शरीर - आत्मा, मिथ्यात्व - आत्मा का काल्पनिक संवाद द्वारा उनका स्वरूप और संबंध प्रस्तुत किया गया है तथा कर्मों का स्वरूप एकांकी के रूप में बताया है।

बाल मनोविज्ञान और बाल मनोभावों को समझते हुए उनके सरल मन को धार्मिक ज्ञान देने के लिए संवाद शैली में लिखी **चलो पाठशाला : चलो सिनेमा भाग - १, भाग - २**, और आधुनिक शैली में लिखी गईं **जैन नर्सरी, जैन के. जी. भाग -१, भाग - २, भाग -३** बालकों को लुभाने में अत्यंत सफल रही हैं। दो साल की अल्पावधि में सवा लाख प्रतियों का बिक जाना इन पुस्तकों की भाषा - शैली आदि की लोक प्रियता का प्रबलतम प्रमाण है। बाल पुस्तकों की इसी श्रृंखला में ७ से १० वर्ष तक के बच्चों के दृष्टिकोण से लिखी गई जैनदर्शन की सामान्य जानकारी देने वाली **जैन जी. के.** के चार भागों का एवं जैन शब्दावली की जानकारी देने वाली **शब्दों की रेल** पुस्तक का प्रकाशन हम शीघ्र कर रहे हैं। कथा साहित्य की दृष्टि से जैन पुराण के आधार पर सरल, प्रवाहपूर्ण आधुनिक शैली में राम कथा के मार्मिक पहलू को स्पष्ट करने वाली **रामकहानी** ने भी अपार ख्याति प्राप्त अर्जित की है।

आपके द्वारा अभी तक छोटी - बड़ी २१ पुस्तकें लिखी गई हैं, जिनकी सूची प्रकाशित की गई है।